मैत्रावरुणर्वसिष्ठः।अश्विनौ। त्रिष्टुप्।

अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति स्तोमं देवयन्तो दधानाः।
पुरुदंसा पुरुतमा पुराजामर्त्या हवते अश्विना गीः॥ ७.०७३.०१

स्तोमम्- मन्त्रम्। दधानाः- धारयन्तः। देवयन्तः- देवकामाः। तमसः- अन्धकारस्य अज्ञानस्य। पारम्। अतारिष्म- तीर्णा वयम्। पुरुदंसा- प्रभूतदर्शनौ। पुरुतमा- प्रभूततमौ। पुराजा- बहुषु जातौ। अमर्त्या- अमरौ। अश्विना- अश्विनौ। गीः। हवते- आह्वयति॥१॥

न्यु प्रियो मनुषः सादि होता नासत्या यो यजते वन्दते च।
अश्नीतं मध्वो अश्विना उपाक आ वां वोचे विदथेषु प्रयस्वान्॥ ७.०७३.०२

यः। यजते- पूजयति। वन्दते- स्तौति। च। स प्रियः। मनुषः- मनुष्यः। होता- देवाह्वाता। नि सादि- निषण्णो भवति। नासत्या- सत्यस्वरूपौ। अश्विना- हे प्राणेशनशक्तिभूतौ। उपाके- अन्तिके। मध्वः- मधुरं रसम्। अश्नीतम्- अनुभवतम्। वाम्- युवाम्। विदथेषु- यज्ञेषु। प्रयस्वान्- हव्यवान्। आ- आभिमुख्येन। वोचे- ब्रवीमि॥२॥

अहेम यज्ञं पथामुराणा इमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम्।
श्रुष्टीवेव प्रेषितो वामबोधि प्रति स्तोमैर्जरमाणो वसिष्ठः॥ ७.०७३.०३

उराणाः- विस्तारभावनां कुर्वाणाः। पथाम्- पतताम्। यज्ञम्। अहेम- वर्धयेम। इमाम्- एताम्। सुवृक्तिम्- शोभनवाचम्। वृषणा- वर्षकौ। जुषेथाम्- सेवेथाम्। स्तोमैः- मन्त्रैः। जरमाणः- स्तुवन्। वसिष्ठः- ऋषिः। प्रेषितः। श्रुष्टीवेव- क्षिप्रगन्ता दूत इव। वाम्- युवाम्। अबोधि- जानाति॥३॥

उप त्या वह्नी गमतो विशं नो रक्षोहणा सम्भृता वीळुपाणी।
समन्धांस्यग्मत मत्सराणि मा नो मर्धिष्टमा गतं शिवेन॥ ७.०७३.०४

Dr. Rangani

त्या- तौ। वह्नी- वोढारौ। नः- अस्माकम्। विशः- प्रजाः प्रति। उप गमतः- आगच्छतः। रक्षोहणा- रक्षोघ्नौ। सम्भृता- सम्यक् धृतौ। वीळुपाणी- दृढबाहू। मत्सराणि- तृप्तिकरान्। अन्धांसि- रसान्। सं अग्मत- प्रत्यागच्छतम्। नः- अस्मान्। मा। मर्धिष्टम्- हिंस्तम्। शिवेन- मङ्गळेन। आ गतम्- आगच्छतम्॥४॥

आ प॒श्चाता॑न्नास॒त्या पु॒रस्ता॒दाश्वि॑ना यातमध॒रादुद॑क्तात्।
आ वि॒श्वत॒ः पाञ्च॑जन्येन रा॒या यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॒ः सदा॑ नः॥ ७.०७३.०५
पूर्वं व्याख्यातम् (७.०७२.०५)

Dr. Ranganji